घरेलू पशु चिकित्सा

प्रकाशक—

बाबू ठाकुरप्रसाद गुप्त बुकसेलर,

राजादरवाजा, दूकान—कचौड़ीगली, बनारस।

मूल्य ॥)

घरेलू पशु चिकित्सा

संग्रहकर्त्ता—

बाबू महादेवप्रसाद सिंह

मु० नाचाप, आरा।

प्रकाशक—

बाबू ठाकुरप्रसाद गुप्त बुकसेलर,

राजादरवाजा, ब्राञ्च—कचौड़ीगली बनारस।

मूल्य ।=)

मुद्रक—

बाबू ठाकुरप्रसाद गुप्त,

बम्बई प्रेस, राजादरवाजा, बनारस सिटी।

जगत् पिता परमात्मा की प्रार्थना करते हुए यह अवश्य कहूँगा कि हमारे भारत देश में पशुओं की बड़ी बुरी दशायें हैं। कारण कि मनुष्यों की तो लोग जैसे तैसे चिकित्सा कर करा भी लेते हैं। परन्तु पशुओं के लिये तो बिल्कुल ध्यान देना ही भूल गये हैं, उन्हें इस बात की खबर नहीं कि पशुओं की दशा बिगड़ जाने से मनुष्यों की क्या दशा होगी। जैसे माता का दूध दूषित होने के कारण बालक की शोचनीय अवस्था हो जाती है, उसी प्रकार पशुओं के रोगी होने के कारण दुग्ध दूषित हो जाते हैं। और हम लोग वही दूध पीते हैं, दूषित दुग्ध के पीने से मनुष्यों में नाना प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। इसलिये पशुओं की चिकित्सा पहिले करना उचित है, और पशुओं पर ध्यान देना आवश्यक है। कहा जाता है कि इस समय अंग्रेजों के प्रयत्न से बिलायती गौओं की दशा बहुत सुधर गई है, और वहाँ की गौएँ अब ऐसी सुडौल, सुन्दर

और दुग्धवती होती हैं कि वैसी गौएँ हमारे देश में देखने में नहीं आती हैं। इसके पहिले बिलायतमें गौओं की दशा निकम्मी थी, कारण कि वहाँ के लोग पहिले गौके गुणों से अपरिचित थे। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि पशुओं की चिकित्सा के लिये अवश्य ध्यान देना चाहिये और मैंने इन्हीं सब बातों का विचार कर पशुओं के जीवन रक्षा हेतु उत्तमोत्तम औषधियों का अपूर्व संग्रह किया है कि साधारण से साधारण मनुष्य पशुओं की चिकित्सा करके मेरे परिश्रम को सफल बनायें और साथ ही अपना यश संसार में कमायें।

निवेदक—

महादेव प्रसाद सिंह

मु० नाचाप, आरा।

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

घरेलू पशु चिकित्सा
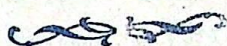
पशुओं के पेट फूलने पर दवा

अञ्जीर (अमरूद) की जड़ की छाल, हरी मेंहदी के पत्ते और काली मिर्च तीनों समान भाग लेकर सिरके में पीस कर पेट पर लेप करे।

(२)

जो अकस्मात पेट फूल जाय तो छटाँक भर सरसों, मँगा कर दोनों कान में भर दे, ऊपर से हुक्का का पानी दे तो पेट पचक जायगा और मूत्र खुल कर होने लगेगा।

(३)

जो दाना चारा खाने के पीछे अत्यन्त परिश्रम कराया जाता है तो बैल पागुर करना छोड़ देता है और उसका पेट फूल जाता है। इसके लिये पावभर सरसों के तेल में छटांक भर खारी नमक मिलाकर नाल (काड़ी) में भर कर बैल को पीला दे इससे शीघ्र आराम हो जाता है।

(४)

सफेद जीरा सौंफ और धनियाँ पीसकर जौ के आँटे में मिलाकर देवे तो पेट का फूलना मिट जाता है ।

खुरहा रोग की दवा

नीला थोथा तूतिया आधी छटांक फिटकरी छटांक भर इनको दो सेर पानी में घोल कर घावों को धो डाले अथवा केवल फिटकरी के पानी से धोवे कीड़े मर जायेंगे ।

(२)

जौ भर भुना तूतिया, कपूर दो तोला, ताड़पीन का तेल छः माशे, असली (तिली) का तेल छटांक भर इनको अच्छी तरह से मिला कर दिन में दो बार लगाये तो कीड़े मर जायें और घाव अच्छे हो जायें ।

(३)

जो इस पीड़ा में ज्वर हो तो खारी नमक छटांक भर चिरयता दो तोला, कल्मी शोरा छः माशे, गुड़ नौ माशे, कपूर डेढ़ छटांक इन सबको सेर भर पानी में घोलकर दिन में कई बार थोड़ा-थोड़ा पिलाता रहे तो ज्वर दूर हो ।

पेट शूल की दवा

इन्द्रायन की जड़, अजमायन, बायबिडंग, भटकटैया, और सेंधा नमक ये सब टके-टके भरले। पुराना गुड़

आधपाव, निगुँडी २ तोला, हल्दी २ तोला अजमान ५ तोला, छोटी हर्ड ५ तोला, भुनी हुई हींग एक तोला, इन सबको कूट पीस कर आटे में मिलाकर नौ गोलियां बनाकर प्रति दिन प्रातः और सायंकाल एक-एक गोली खिलादे तो पेटका शूल, अफरा और अजीर्ण आदि उदर विकार जाते रहते हैं।

बदहजमी की दवा

काली मिर्च, हींग, बड़ी बच और आजमोदे ये चारों एक-एक पैसे भर ले और सेन्धा नमक छटांक भर ले इन सबको कूट पीसकर चने के आँटे में मिलाकर गोली बनाकर खिला देने से बदहजमी नाश हो।

नोट—इस बात का ध्यान रहे कि पशु की अवस्था और रोग का विचार कर दवा की मात्रा घटा बढ़ा देनी चाहिये। और बैल के लिखने से यह न जाने की सिर्फ बैल के लिये ही लिखा गया है। जैसे बैल को लिखा है उसी प्रकार गाय, बैल, भैंस को भी दें।

पतली दस्त की दवा

माजूफल का चूर्ण दो तोला, चिरायते का चूर्ण दो तोला खरिया मिट्टी तीन तोला कूट छानकर चावल के गर्म मांड़ के साथ दिन में दो बार देवै तो अच्छा होवै।

गोबर के साथ खून आवे उसकी दवा।

माजूफल का चूर्ण चार आने भर, कत्था अधेला भर खरिया मिट्टी का चूर्ण एक छटाँक इनको मिलाकर चावल के सेर भर माँड़ के साथ दिन भर में दो बार देवें तो अच्छा होवै।

खाँसी और ढाँसी की दवा।

अरूसे का पत्ता एक छटाँक, साँभर निमक टका भर जौ के आटे के साथ दिन में तीन बार खाने को देवै तो अच्छा हो।

पशु काँपे उसकी दवा।

गेरू को जल में घोल कर पिलाने से कँपना आराम है।

पशु की तारू फूले उसकी दवा।

सोआ का बीज और अजमायन दोनो दो-दो तोले लेकर पानी में औटाले फिर ठंढा करके उसे मसल कर छान ले और पशु को पिला दे तो अच्छा हो।

पशु के जीभ पर काँटे हों उसकी दवा

नमक और हल्दी कूट पीसकर मिलाले और जीभ पर लगाकर एक हाथ से जीभ को पकड़ ले और दूसरे हाथ से जीभ को झावें से खूब रगड़ डाले तो काँटे मिट जावें।

पशु के आँख मुँह पीले हों उसकी दवा।

खारी नमक पाव भर और सोंठ आधी छटाँक महीन पीस कर मिला के चावल के माँड़ के साथ पिलावे तो अच्छे हों।

लाल और काला पेशाब की दवा

प्रथम—तीन पाव अलसी (तिसी) का तेल देवैं इसके पीछे यह दवा देवै। पिसा हुआ अदरख सवा तोला चिरायता का चूर्ण सवा तोला, काली मिर्च का चूर्ण सवा तोला, अजमायन का चूर्ण सवा तोला, नमक एक छटाँक गुड़ पाव भर ये सब मिलाकर दिन में दो बार देवै तो अच्छे होवै।

पशु के पेटके भीतर कीड़े पड़े उसकी दवा।

खिसारी की दाल आध सेर रातको पानीमें भिगोदे और सबेरे छ न कर उसका पानी पिला दे और थोड़ी देर बाद दाल भी खिला दे तो सब कीड़े निकलकर गिरपड़ेंगे।

पेट के भीतर जो नली में कीड़े पड़ते हैं उसकी दवा।

अलसी (तीसी) का तेल आध पाव, तारपीन का तेल आधी छटाँक, जीरा आधी छटाँक इन तीनों को मिला कर दिन में दो बार देवे तो भीतर नली के कीड़े दूर होवें।

पशुओं के घाव में कीड़े पड़ें उसकी दवा।

प्रथम घाव को हुक्के के पानी से धोकर साफ करे फिर घाव में थोड़ी बच पीस कर भर दे तो सब कीड़े मर कर गिर पड़ेंगे।

(२)

तम्बाकूके पत्ते और फिटकरी पीसकर घावमें भर देने से कीड़े मर जाते हैं।

घाव का मरहम।

सरसोका तेल आध सेर, नीम का तेल आध पाव, कनेरकी पत्ती और प्याज ये दोनों आध-आध पाव, भिलावा आधा छटांक, नीलाथोथा एक तोला पहले दोनों तेल को कढ़ाई में डाल कर अग्नि पर चढ़ा दे फिर उसमें कनइलकी पत्ती और प्याज कुचलकर और नीलाथोथा तथा भिलावेको पीसकर डाल दे जब सब जलकर राख हो जाय केवल तेल रहे तो उतारले और जब ठण्डा हो जाय तो रगड़कर मिला लेवे। इस तेलको घाव पर लगानेसे कीड़े मर जाते हैं और मक्खी नहीं बैठती है तथा घाव बहुत जल्द अच्छे हो जाते हैं।

पैदा होते ही बच्चों के घुमरी रोगकी दवा।

तुखमबांलगू तीन माशे, गौ का घी एक तोला लेकर

गरम करके दोनों मिला ले फिर गुनगुना करके नाल (काड़ी) में भरकर पिला दे तो बच्चों का घुमरी रोग दूर होवे।

धनुषटंकार रोग की दवा।

इस रोग को कोई टेंगहा, कोई हतैयारा, कोई धनुषटंकार कहते हैं। इस रोग के होने पर पशु के पाँव जकड़े से हो जाते हैं उसे चलने-फिरने में बड़ा कष्ट होता है अपनी गर्दन को लम्बी किये रहता है, गोबर भी खुलकर नहीं करता और उसका मुख भी अच्छी तरह नहीं खुलता है इस रोग में प्रथम ही जमाल गोटे का तेल दस बूँद थोड़े से गरम जल में मिला कर पिला दे। इस जुलाब से जब कुछ दस्त हो जाये दूसरे दिन तोले भर हींग थोड़ी-थोड़ी कई बार गर्म पानी में घोलकर या किसी प्रकार से पशु के पेट में पहुँचा देनी चाहिये। इसी तरह दो-तीन दिन तक हींग देता रहे। अथवा त्रिला डाना का सत छः माशे और हींग तीन माशे आधसेर पानी में घोलकर नाल काड़ी) के द्वारा दिन में तीन बार पिला दे तो धनुषटंकार रोग दूर होय

घाव के खून बंद करने की दवा।

पुराने कम्बल की राख करके घाव में भर दे खून बन्द हो जायगा। अथवा मकड़ी का जाला भर देने से भी खून बन्द हो जाता है। चाहे चोट का लगा अथवा कोई

प्रकार से कटा क्यों न हो उपरोक्त लिखी उपायों के करने से खून अवश्य बन्द हो जायगा।

घाव पर बाल जमाने की दवा।

घाव अच्छे हो गये हों और खाल भी हो गये हों परन्तु बाल न जमे हों तो नील की बट्टी को मनुष्य के थूक में घिसकर लगाने से बाल जम जाते हैं। अथवा काली तिल पानी में पीस कर लगाने से बाल जम जाते हैं

कटी पूँछ पर बाल जमाने की दवा।

एक प्रकार की चरंगवा मछली होती है, उसको सरसों के तेल में डालकर जला ले फिर पत्थर पर महीन पीसकर धर ले इसको कटी पूँछ पर एक महीने तक लगाये (चुपड़े) तो बाल जम जाते हैं।

कंधे पर बाल जमाने की दवा।

हाथ भर की सेहुँड़ की नरम डंडी लाकर उसके कांटे और छिल्के साफ कर छोटे छोटे टुकड़े काटकर लें फिर सरसों के तेल में डाल कर पकावे जब जल कर राख हो जाय तब उतार कर महीन पीस ले इसको एक महीने तक चुपड़ने से कन्धे पर बाल जम जाते हैं।

ढलके रोग की दवा।

पशुके आंखोंसे सदा आंसू बहा करे तो, दोनों सीगों

के बीच में एक गड्ढा होता है उस गढ़े में प्रदिदिन अरंड का तेल भर दे तो पांच सात रोज के भर देने से आराम हो जाता है।

आँख के जाले, माड़े और फूली की दवा ।

सेंधा नमक और कलपी मिश्री को महीन पीसकर डाले तो पशु के आँख का माँड़ा, जाला और फुल्ली आराम हो।

आग से जलने की दवा ।

चूने का पानी पावभर, अलसी (तीसी) का तेल पाव भर दोनों को खूब मिलाकर इसमें एक कपड़ा भिगोकर जले हुए स्थान पर नित्य लगावे तो आराम हो। अथवा मेथी, लेट स्प्रीट कोले रुई के फाहा से जले स्थान पर लगावें तो अच्छे होवे।

मूत्र बन्द की दवा ।

दो तोले कल्मी सोरा महीन पीसकर तीन पुड़िया बना ले एक पुड़िया सेर भर गौ के दूधमें मिलाकर नालमें भर कर देने से पेशाब होने लगता है। अथवा शराब आध पाव और गौ का घी मिलाकर पिलाने से पेशाब खुल जाता है।

पशु के पतले दस्त की दवा ।

संचर नमक, सेंधा नमक, सांभर नमक जवाखार, सज्जी, हरड़, बहेड़ा, आँवला, हल्दी, छोटी हरड़, सफेद जीरा, काला जीरा, भाँग, देवदारु, काली मीर्च, पीपल, पीपलामूल, मूलीके बीज, सोआ के बीज बायविडंग, सतावर, नागौड़ी असगन्ध, सोंठ अजवायन, अजमोद, सहजने की छाल इन सबको टका-टका भर लेकर पीस छानकर चूर्ण बनावे इसमें से प्रतिदिन दो तोला खिलावे तो दस्त बन्द होय।

(२)

धनियां टका भर, सफेद जीरा टका भर, एक छटांक भाँग इसकी दो मात्रा करके जौ के आटे में मिलाकर दोनों समय खिलावे । अथवा आध पाव अलसी (तिसी) पीस करके आटे में सानकर देवे ।

खून के दस्तों की दवा ।

धनियां और सेंधा नमक पिसवा कर जौ के आटे में मिलाकर खिलावे। अथवा कतीरा भिगाकर जौ के आटे में मिलाकर देने से भी रुधिर के दस्त बन्द हो जाते हैं ।

पशुओं के पैर की गाँठ सूजने की दवा ।

बायविडंग, भाँग, अजवायन, सहजनेकी छाल, निगुड़ी ढाक के बीज, सेंधा नमक इन सबको समान भाग लेकर

पीसकर चूर्ण कर ले दो तोले चूर्ण के साथ दो तोले घी मिला कर एक महीने तक पशु को दे तो सूजन रोग दूर होय।

बैल का कन्धा फटे उसकी दवा।

भैंस का गोबर पानी में मिला पका कर लेप करे। अथवा सुअर की चर्बी लगावे तो कन्धे फटे अच्छे होयँ।

कठोर गोबर (कंडा) बँध जाने की दवा।

हल्दी, साँभर नमक, काली मिर्च ये तीनों एक-एक छटाँक महीन पीस कर पाव भर सरसों के तेल में मिलाकर (काढ़ी) में भर कर पिलावे। इतना-इतना सात रोज तक पिलावे तो कठोर गोबर का रोग जाय।

बच्चों के पतले दस्त की दवा।

खड़िया मिट्टी का चूर्ण एक छटाँक, कत्था आधी छटाँक अदरख अधेला भर, अफीम दो आना भर, सौंफ का पानी डेढ़ पाव इन सबों को मिला कर दिन में चार चार पिलावे तो बच्चों का पतला दस्त करना अच्छा होय।

बच्चों के पेट में कीड़ा (चिल्ह) पड़ने की दवा।

धनियाँ एक छटाँक, हल्दी एक छटाँक, गुड़ एक

छटाँक ये तीनों को महीन पीस एक पाव पानी में घोल कर गुनगुना गर्म करके नाल (काड़ी) में भरकर देवें तो दो तीन रोज में बच्चों के पेट के कोड़े (चिल्ह) सब मर कर गिर पड़ेंगे।

पशु के मुत्र में रुधिर आने की दवा।

मण्ठा और खाँड़ मिलाकर पिलाने से पेशाब में रुधिर आना बन्द हो। अथवा बबूल की पत्ती पाव भर और दो तोले हरदी पीस कर नाल(काड़ी में भरकर दोनों समय दवे तो पेशाव में रुधिर आना बन्द हो।

लाल मूत्र की दवा।

पाव भर सफेद तिल को ले रात को भिगोकर सबेरे घोंटकर सात दिन तक पिलावे तो आराम हो।

खुरके घाव में लगाने का तेल।

पाव भर अलसी (तिसी) का तेल, छटाँक भर कपूर डेढ़ तोले तारपीन के तेल को पकाकर कपूर उसमें डाल दे और आग से उतार कर शीशी में रख ले। इस तेल को घाव में लगाने से कीड़े मर जाते हैं और फिर पड़ने नहीं पाते।

गले फूलने की दवा।

जमाल गोटा के बीज एक छटाँक और तारपीनका

तेल पाव भर इन दोनों को मिलाकर पन्द्रह दिन तक एक बोतल में भर कर रखदे फिर उसको छान कर उतनाही नारियल का तेल मिला के गला फूलने पर मालिश करे तो अच्छा होय।

गला फूलने का जुलाब।

अलसी (तिसी) का तेल पावभर, गन्धक का चूर्ण आध पाव सोंठ का चूर्ण एक तोला ये सब मिलाकर चावल आध सेर माँड़ के साथ देना चाहिये।

पेट फूलने की दवा।

नमक आधी छटांक, कचरी एक छटांक दोनों को पीस कर सेर भर छाछ (मंठा) मिला नाल (काड़ी) में भर कर पिलादे इससे थोड़ी देर में दस्त आने लगेगी और पेट फूले का रोग नाश हो जायगा।

जहर बात रोग की दवा।

एक तोले भर कूटकी, एक तोले बंडार, टकाभर काला जीरा इन तीनों को पीसकर जौके आटे में मिलाकर कईबार करके दिन भर में खिलावे तो जहर बात रोग जाय।

जहर बात पर लेप।

मकोय, काला जीरा, बंडार इन तीनों को पीस कर

गुनगुना गरम कर लेप करे और ऊपर से महुआ की पत्ती बाँध दे तो जहरबात जावे ।

घोड़े की आँख रोग की दवा ।

जो चोट लगने से घोड़े की आँख में ललाई आगईहो तो दो तीन दिन तक नमक और फिटकरी के पानी से धोवे तो अच्छा होय । अथवा समुद्रफेन, पके हुए चावलों का माँड़ और शहद तीनोंको मिला कर आँख में आंजन की तरह लगावे तो अच्छा होय ।

आँख में फूली की दवा ।

फूली हुई फिटकरी और उसके बराबर ही सिन्दूर मिलाकर पीस ले । इसमें से पांच रत्ती प्रतिदिन दो बार आँख में लगावे तो फूली का नाश हो ।

नाखूना और माँड़े जाले की दवा ।

कालीमिर्च, बीजबन्द, भांग, सुहागा, सेन्धा नमक, फिटकरी फुलाई हुई, और गूगल इन सबको बराबर लेकर कड़वे तेल में मिला कर अंजन लगावे तो नाखूना जाला दूर होय ।

नाक का रुधिर बंद करने की दवा ।

जिस घोड़े की नाक से रुधिर बहता हो उसकी नाकमें

हिरन या भैंस के सींग की राख नली में भर कर नाक में फूँके तो रुधिर का बहना बन्द होवे।

नाक से कीड़े गिरें उसकी दवा।

कभी-कभी घोड़े की नाकसे कीड़े गिरा करते हैं और दुर्गन्धित रुधिर निकला करता है। इसके लिये बच त्रिकुटा त्रिफला इनको पीस कर इतना ही गुड़ में मिला घी में सान कर खिलावे तो अच्छा होवे।

रुधिर बमन की दवा।

जो घोड़ा रुधिर बमन करता हो उसके लिये जामुन की छाल छाया में सुखा, मुर्गी के तीन अण्डे की सफेदी मिला कर एक-एक गोली प्रतिदिन प्रातःकाल सात दिन तक खाने को दे तो अच्छा हो।

घोड़े के पेशाब बन्द की दवा।

सोंठ और भाँग दोनों लेकर काजल समान गौमूत्र में रगड़ कर बत्ती बना ले फिर घोड़े या घोड़ी के मूत्र स्थान में रख देवे तो पेशाब उतर जावे। अथवा मुर्गी के दो अण्डे जौ के आंटे में मिलाकर खिलावे। इसी प्रकार दो-दो घन्टे पीछे दो-दो अण्डे देवे तो पेशाब उतरे।

घोड़े की दस्त बन्द की दवा।

गुड़ तीन छटाँक, हींग दस रत्ती, सौंफ एक छटाँक,

इन सबको मिलाकर तीन गोलियाँ बनावे और जब तक दस्त न होवे तब तक घण्टे-घण्टे भरमें एक-एक गोली देता रहे। अथवा बहुत जल्द दस्त करनेकी आवश्यकता होवे तो पाव भर अलसी (तिसी) के तेल में दस बुन्द जमालगोटे का तेल मिलाकर देवे तो तुरन्त दस्त हो।

पीठ की सूजन की दवा।

गेहूँ का मैदा, हल्दी, सज्जी इन सबों को महीन पीस कर अग्नि पर पकाकर लेप करे तो पीठ की सूजन दूर होय।

पीठ की घाव की दवा।

पुराने जूते की राख घाव में भर दे। अथवा इस राख को कड़ुवे तेल में या मिट्टी (किरासन) के तेल में मिलाकर लेप करे तो पीठ पर का घाव अच्छा होय।

पेट में कीड़े पड़े उसकी दवा।

जब घोड़े के पेट में कीड़े पड़ जाते हैं। जो दस्त में निकला करते हैं, उसके लिये नमक दो पैसा भर, जुन्तआना पैसा भर, लोहे का जंग पैसा भर, सबैन धेला भर, और जीरा थोड़ा सा इन सब चीजों को मिला कर गोली बना लेवे, सात दिन तक सबेरे एक-एक गोली देवे, इसके पीछे जुलाब देवे तो आराम हो।

आँव और दस्तों की दवा।

जिस घोड़े की दस्त में आँव और खून आता हो उसके लिये मेंहदी की पत्ती आधी छटाँक, सूखी बेल गीरी एक छटाँक, कतीरा आधी छटाँक, सफेद जीरा आधी छटाँक इन सबको कूटकर मिला ले और आधा सबेरे तथा आधा शाम को खिलावे तो आराम होवे।

❀ पशु चिकित्सा समाप्त ❀

अब मनुष्योंकी चिकित्सा लिखते हैं

प्रथम बाजीकरण प्रयोग का वर्णन करते हैं।

बाजी घोड़े को कहते हैं, जिन प्रयोग और उपायों के द्वारा पुरुष बलवान और अमोघ सामर्थ्यवाला होकर घोड़े की तरह स्त्री संगममें समर्थ होता है, जिन वस्तुओं के सेवन से कामिनी गणों का प्रियपात्र हो जाता है और जिनसे शरीर की वृद्धि होती है, उसी को बाजीकरण कहते हैं। बाजीकरण औषधियों के सेवन से देह बड़ी कान्तिमान और बलिष्ट हो जाती है।

बाजीकरण औषधि।

सिंगरफ, कपूर, लौंग, अफीम, उटगन के बीज इनको महीन पीसकर कागजी नीबू के रस में घोटकर मूँग के

बराबर गोली बना ले फिर एक गोली खाकर ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीकर रमण करने से स्तम्भन होता है ।

(२)

सूखा तमाखू, और लौंग दोनों बराबर ले महीन पीस के शहद में मिलाकर उर्द के बराबर गोलियाँ बनाले इनमें से एक गोली खाकर संभोग में प्रवृत होना चाहिये ।

(३)

थूहर का दूध और गौ का दूध इन दोनों को बराबर लेके मिलाकर चार पहर धूप में सुखावे फिर पाँव के तलुओं में लेपकर स्त्री प्रसंग करे पांव को धरती में जब तक न धरे तब तक वीर्य स्खलित न होवे ।

(४)

कौंचकी जड़ एक पोरूए के बराबर लेके मुखमें रक्खे और स्त्री प्रसंग करे जब तक मुख में रहेगी तब तक वीर्य स्खलित न होगा और रति कर्म में बड़ा ही आनन्द प्राप्त होगा ।

(५)

छछूँदर का अण्डा लेकर चमड़े में रखकर यन्त्र (तावीज] बनाकर रख लेवे फिर कमर में बांधकर स्त्री

संयम करे जबतक यन्त्र कमर से न खुलेगा तब तक वीर्य स्खलित न होगा ।

चूर्ण ।

चीता, बच, देलगिरी, सोंठ इन सबोंको एकत्र कर कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर इस चूर्ण को तक्र (माठा) के साथ लेने से दुष्ट संग्रहणी दूर हो जाती है ।

चूर्ण ।

काला नमक, चीता, मिर्च इनका चूर्ण करके तक्र माठा के साथ लेने से संग्रहणी, उदररोग, वायुगोला, अर्श क्षुधा की मन्दता और प्लीहा ये सब रोग नष्ट हो ।

चूर्ण ।

सोंठ, मिर्च, पीपल, इन्हें समभाग लेकर चूर्ण बनाये और चूर्ण बराबर गुड़ तथा दुगुना घी मिला के चाटने से श्वास रोग बहुत शीघ्र नष्ट होता है ।

चूर्ण ।

पोस्ता, हड़, सौंफ, सोंठ इन सबको बराबर ले फिर सौंफ और हड़ को घृत मे भून ले और फिर सोंठ और पोस्ता को मिलाकर चूर्ण बना पैसा पैसा भर नित्य पांच दिन तक ठंढे पानी के साथ खावे तो आँव, लोहू और मरोड़ सब दूर हो ।

बाई का चूर्ण ।

सोंठ, पीपल, सनाय, हड़, बहेड़ा, आंवला, चीता, सेंधा नमक, सांभर नमक, खारी नमक, काली मिर्च, निसोत, पोदीना, सौंफ, अनारदाना, हींग, जवायन, अजमोदा, मेथी, तेलिया सुहागा सब औषधियों को छः छः माशे ले और हींग को एक माशे लेकर कूट पीस कर नीबू और अदरख के रस में गोली बनाके एक तथा दो नित्य खावे तो वायु के सब विकारों को दूर करे ।

पाचन चूर्ण ।

हड़, आँवले, चीता, पीपल, सेंधानोन इन पांचों औषधियों को बराबर ले कूट पीस कर चूर्ण बना लेवे फिर गर्म पानी के साथ फंकी करे तो सब उदर विकारों को दूर कर पाचन करे, और भूख बढ़ावे ।

वायुनाशक गोली ।

सोंठ दो माशे, तेलिया सुहागा दो माशे, पीपल दो माशे, काली मिर्च दो माशे, हड़ छः माशे, पांचों नोन पांच तोले और अजवायन छः माशे, इन सबको ले कूट पीस सहिजने के रस में गोली बांधे फिर एक तथा दो नित्य खावे तो चौंसठ तरह के वायु को दूर करे ।

सब ज्वर का चूर्ण।

आँवले, चीता, हड़, पीपल, सेंधा नमक इन सबको बराबर ले कूट पीस छान चूर्ण बना गरम पानी के साथ फंकी करे तो सब ज्वरों को दूर करे।

शूल और आमवात का चूर्ण।

सोंठ, हड़, वायबिडंग सेंधा नमक और पीपल इन सबको कूट पीस छान चूर्ण बनावे फिर टंक प्रमाण खावे तो तीन दिन में आमवात और शूल को दूर करे।

हिंग्वाष्टक चूर्ण।

हींग एक तोले, अजमोद तीन तोले, जीरा तीन तोले सोंठ तीन तोले, काली मिर्च तीन तोले, पीपल तीन तोले सेंधा नोन एक तोला, साँभर नोन एक तोला इन सबको ले कूट पीस छान कर चूर्ण बनावे फिर भोजन के ग्रास से घृत और चावल के साथ खावे तो शूल, अर्द्धांग और अजीर्ण सब रोगों को दूर करे और भूख बहुत लगावे।

वायु की गोली।

सोंठ, मिर्च, पीपल, हड़, सहजन के बीज और लौंग इन सबको एकत्र कर कूट छान के सहजन के रस में बेर प्रमाण गोली बांधे फिर नित्य खावे तो चौंसठ वायु और बहत्तर शूलों को दूर करे।

वायु का चूर्ण।

पीपल, सौंफ, लौंग लौटक, सज्जी, सेंधा नोन इन सबको बराबर लेकर कूट पीस छान कर चूर्ण बनावे फिर नित्य खावे तो वायु को दूर करे।

सुदर्शन चूर्ण।

हड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, हल्दी, दारू हल्दी, गिलोय, कूट, मोथा, जवासा ककड़ा सिंगी, कटहरी की जड़, पीपला मूल, कचूर, वच, पुष्कर-मूल, मुलहठी कुड़ा की छाल, सौंफ, कमल गट्टा, इन्द्रयव, देवदारू, मँजीठ, पद्माख, खस, तज, गोखरू, सालममिश्री अजवायन, अतीश, बेलगिरी, पत्रज, चीता इन सब औष-धियों को बराबर लेकर कूट पीस छान कर चूर्ण बनावे फिर गरम जल से फंकी करे तो सर्व ज्वरों को दूर करे तथा इससे सन्निपात, अजीर्ण, शूल, और विसूचिका भी जाय।

ज्वर की दवा।

गुर्च और आमला चार-चार माशे लेकर पाव भर पानी में काढ़ा करे जब छटाँक भर रह जावे तब ठण्ढा कर पीवे तो पित्त ज्वर दूर हो।

[२]

पित पापड़ा डेढ़ तोला लेकर पाव भर पानी में काढ़ा

करे जब एक छटांक रहे तब पीवे तो पीत्तज्वर दूर हो और दाह और प्यास और श्रम भी मिटे।

[३]

गुर्च माशे ६ को लेवे और मिट्टी के कोरे वर्तन में रात को एक छटाँक पानी में भिगोदेवे सबेरे बांट [पीस] कर कपड़े में छान लेवे और एक तोला शक्कर डाल कर पीवे तो पीत्तज्वर, दाह, शोष दूर होवे।

[४]

छोटी पीपर को बारीक पीस कर छान के चार मासे ले छः मासे शहद में मिलाय कर चाटे तो कफज्वर, श्वास, खांसी तापतिल्ली और हिचकी दूर होवे।

[५]

शक्कर दस तोला और कुठकी बारीक पिसी हुई मासे छः दोनों को मिलाकर आधपाव गर्म पानी से खावे तो पित्त कफज्वर प्रथम दिवस ही से दूर हो। यह औषधि सबसे उत्तम है इसके खाने के दो घण्टे बाद दो दस्त केवल सफेद आम के होते हैं और जाड़ा बुखार उसी दिन दूर हो जाते हैं।

[६]

अरूसा के पत्ते और फूलों का स्वरस दश तोला और

शहद एक तोला दोनों को मिलाकर पीवे तो पित्त कफ का ज्वर दूर हो और मुख व नाक से खून गिरना और कमल वायु तथा खांसी इतने रोग दूर होवें।

[७]

अदरख छः माशे, परवल छः माशे दोनों को पावभर पानी में काढ़ा करे जब एक छटांक रहे तब ठंढा कर पीवे तो पित्त कफज्वर, छर्दि, दाह, इतने रोग दूर हों।

[८]

यदि सन्निपात वाला रोगी बेहोशी में बकता होवे तो गुलरोगन अथवा काहू का तेल छः माशे एक-एक घण्टे पीछे शिर मस्तक और खोपड़ी में लगाया करे।

[९]

अथवा सिरस के बीज, छोटी पीपर, मिर्च, सेंधानमक, लहसन, मनसिल, बच इन सबको बराबर लेकर गोमूत्र में महीन पीसकर आँखों में अंजन लगावे तो बेहोशी और बकवाद दूर होवे रोगी अपने होश में आजावे।

[१०]

जीरा सफेद चार माशे बारीक पीस कर छः माशे गुड़ में मिलाकर खावे तो विषमज्वर अर्थात् जाड़ा बुखार दूर हो।

[११]

बड़ी हर्र की बकली छः माशे महीन पीस छान कर छः माशे शहद से चाटे तो जाड़ा बुखार दूर हो वमन दूर हो संग्रहणी दूर हो और जुखाम भी दूर हो उक्त चारों रोगों पर उक्त दवा अपूर्व काम करती है, कभी खाली नहीं जाती उक्त दवा खाने के दो घण्टे बाद दो दस्त होती हैं उक्त चारों रोगों पर यह कई वार परीक्षा में आ चुकी है।

अरिष्ट चूर्ण।

नीम की छाली, पत्ते, फूल, फल और जड़ ये सब १२ तोले, सोंठ ३ तोले, मिर्च ३ तोले, पीपर ३ तोले छोटी हर्र की बकली ३ तोले, आँवला की बकली ३ तोले बहेड़ा की बकली ३ तोले, काला नमक ३ तोला, सेंधा नमक ३ तोला, सांभर नमक ३ तोला, सज्जीखार ३ तोले, जवाखार ३ तोले, अजवायन ३ तोले, इन सबको महीन पीस कर कपड़ छानकर किसी शीशी में रखलो फिर छः माशे या सात माशे खाकर ऊपरसे आधा पाव गरम पानी पीवे तो अति शीघ्र प्रतिदिन का आनेवाला जाड़ा बुखार एकान्तरा, तिजारिया, चौथिया, रात्रि में आनेवाले ज्वर, दाह ज्वर, मलज्वर, सन्निपात ज्वर, मधुरा, कफ ज्वर इत्यादि ज्वर अच्छे हों।

लाक्षादि तैल।

पीपल वृक्ष की लाख [लाही] एक सेर लेकर चार सेर पानीमें औटावे जब एक सेर पानी रह जाये तब उतार कर छान लेवे फिर उसमें तिल का तैल एक सेर डाले और गायकी दहीका पानी निचोड़ा हुआ ४ सेर डाले फिर सौंफ असगन्ध, हल्दी, देवदारू, रेणुका, कुटकी, मरोरफली, कूट, मौरेंठी, नागरमोथा, लालचन्दन, रास्ना, कमलगट्टा और मजीठ ये सब एक-एक तोला लेकर पानी डाल महीन बाँट [पीस] कर उसी में डाल देवे फिर सबको कड़ाही में डाल आग पर चढ़ाके मन्दाग्नि से चार पहर में तेल को सिद्ध करे सब जल जाय केवल तेल रहे तो उतार ठंढाकर छान लेवे और शीशी बोतल में भरकर रख देवें फिर इस तैलसे नित्य मालिश करे तो जीर्ण ज्वर, त्रिषम ज्वर ताप, तिजारी, खुजली, शूल शरीर की दुर्गन्ध और सर्व शरीर के फोड़े दूर हों, माथे का दर्द मिटे। स्त्री लगावे तो गर्भवती हो और गर्भवती लगावे तो गर्भ पुष्ट हो दाह मिटे इत्यादि यह और भी अनेक रोग दूर करे कभी निष्फल नहीं जाता यह महा उत्तम तैल है।

सिंहशार्दूल गोली।

हींग चार माशे, वच चार माशे, अजवायन चारमाशे,

बायबिडंग एक तोला, सेन्धा नमक एक तोला, जीरा सफेद डेढ़ तोला, सोंठ डेढ़ तोला, मिर्च दो तोला, पीपर छोटी ढाई तोला, कूट दो तोला आठ माशे, हर्र तीन तोला चार माशे, भारंगी तीन तोला आठ माशे, चिरायता चार तोला अजमोद चार तोला इन सब औषधियों से दूना गुड़ ले सुपारी प्रमाण गोली बनावे फिर एक गोली सबेरे औरएक शामको खावे तो चौरासी वायु, प्रलाप, सन्निपात, बवासीर, भगन्दर, शाकिनी दोष, भूत प्रेत, राक्षस, बैताल पिशाच, मूर्छा अजीर्ण अहार, फोड़ा, फुंसी, मंत्र यंत्र, टोना, टामन दीठ, मूठ पेट पीड़ा, अफरा, स्थावरजंगम विष दूर हो जैसे सिंह को देखकर हिरना भागे तैसे इस दवा को देख-कर रोग भी भागे यह श्री धन्वन्तर जी ने अपने पुत्र को बताई है ।

अतीसार की दवा ।

जावित्री, जायफल, नागकेशर, लौंग, अफीम, इन सबको चार चार माशे ले महीन पानी से पीस एक एक रत्ती की गोली बांधकर छायामें सुखाले फिर सफेद जीरा चार रत्ती और सोंठ चार रत्ती दोनों को पीस कर उसीमें एक गोली रखकर फांक लेवे ऊपर से एक छटाँक ठंढा पानी पीवे तो दाह और प्यासयुक्त अतीसार एक ही खुराक में बन्द होवे यह

कई बार की परीक्षा की हुई है कभी खाली नही जाती उत्तम है । अतीसार में पतला दस्त होता है और संग्रहणी में गाढ़ा मल दर्द हो होकर बहुत ही थोड़ा २ निकलता है इतना भेद अतीसार और संग्रहणीमें है । मैंने स्वयं परीक्षा की हुई उत्तमोत्तम औषधियाँ मनुष्यों के सिर से लेकर पैर तक और सांप तथा बिच्छू की जड़ी घरेलू वैद्य नामक पुस्तकमें लिखी है । पाठकगण उसे मँगाकर लाभ उठावें और संसारमें पुण्य कमावें । ऐसी पुस्तक कम दाम और उत्तम औषधियों की आजतक नहीं निकली है । एकबार मँगा उसकी करामात तो देखे फिर कहना ही क्या है ।

संग्रहणी की दवा ।

अफीम १ तोला, चूना सीप का एक तोला, दोनों को पानी से पीसकर मसूर के बराबर गोलियाँ बना ले फिर एक गोली सवेरे और एक शाम को खावे तो सब प्रकार की संग्रहणी और अतिसार दूर हो ।

[२]

मसूर २ तोला तीन छटाँक पानी में भिगोय देय और काढ़ा करे जब १ छटाँक पानी बाकी रहे तब उसमें छः माशे बेलगिरी डाल दे जब देखे कि बेलगिरी गल गई

तब उतार छान ठण्ढा कर पीवे तो संग्रहणी, आम, पांडुरोग कामला व कोख का दर्द दूर होवे।

बवासीर की दवा।

कुकुरौंधे का स्वरस एक सेर लेकर कड़ाही में डालकर मंदाग्नि से औटावे जब गाढ़ा हो जावे काली मिर्च छः माशे पीसकर उसीमें मिलाकर जंगली बेर के बराबर गोली बनाके छायामें सुखा ले फिर एक गोली सबेरे और एक शाम को खाया करे और इसी गोली को सरसों के तेल में पीस कर पाखाना की जगह पर रोज लगाया करे तो २१ दिन में सब प्रकार का बवासीर जाये।

(२)

कचनार, जामुन, मौलश्री इन तीनों के छाल दो-दो तोले लेकर और आधा सेर पानी में काढ़ा करे, जब पावभर रह जावे तब उतार ठंढा कर पाखाने की जगैह को उससे सात दिन धोवे तो सब प्रकार का बवासीर दूर हो। इस रीति से सात दिन काढ़ा करे।

हैजे की दवा।

पोदीना की पत्ती ३० काली मिर्च ३ काला नमक १ माशे, इलायची छोटी भुनी हुई दो, अमिली कच्ची या पक्का १ माशे इन सबको पानी से महीन बाँट (पीस)

कर चाटे तो बमन व दस्त और पेट का दर्द उसी दम बन्द हो और प्यास भी मिटे।

(२)

हींग, सोंठ, मिर्च, पीपरि सेंधा नोन ये सब एक-एक माशा लेकर इनको पानी से पीसकर पेट पर लेप करके सो रहे तो सब प्रकार के अजीर्ण (हैजा) दूर हों। हैजा रोग की उत्तमोत्तम औषधि मैंने घरेलू वैद्यक नामक पुस्तकमें लिखी है जो कि हैजा रोग में जादू की तरह काम करती है।

(३)

आक (एफ़बन) की जड़ दो तोला, अदरख का अर्क दो तोला में खरल करके और कालीमिर्च के बराबर गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा ले फिर एक गोली हैजा वाले को दे तो मरता भी हो तो भगवान की दया से बच जावे यह बहुत उत्तम दवा है अनुभव करें।

कृमिरोग की दवा।

वायबिडंग ५ माशे ले चूर्ण कर एक तोला शहद के साथ खावे तो पेट के सब कीड़े (कृमि) दूर हों।

पाण्डुरोग की दवा।

लुहार की दूकान पर जब हथियार या लोह पीटने परजो मैल जमा रहती है उसको कीटी कहते हैं उसको

लेकर महीन पीस १ माशा और गुड़ छः माशा में मिलाय ११ दिन खावे तो पांडुरोग जाय।

कमलरोग (पीअरी की दवा)

गोमांके स्वरस को आँखों में अंजन करे तो कमल-बाय दूर हो। अथवा कुटकी छः माशे शक्कर छः माशे दोनों को मिलाकर पानी के साथ खावे तो कमल रोग जाय।

दाखारिष्ट (शर्बत)

मुनक्का ढाई पाव, पानी अढ़ाई सेर औटावे जब अढ़ाई पाव रह जावे तब उतार कर छान लेवे फिर उसमें ढाई सेर गुड़ डाले और तेजपात, इलायची, नागकेशर, मेंहदीके फूल, काली मिर्च, पीपर छोटी, बायविडंग इन सबको एक एक तोला ले महीन पीसकर डाल दे और कड़ाही में ढालकर औटावे कलछुलसे बराबर हिलाता रहे जब पकजावे तब उतार कर शीशी में भर रक्खे फिर शरीर का बल देखकर एक तोला या दो तोला या चार तोले प्रति-दिन सबेरे खावे तो छाती का दर्द, व अन्दर घाव, और राजयक्ष्मा खाँसी, श्वास, अरुचि, तृषा, दाह गलेके रोग ज्वर, स्रीहा, मन्दाग्नि रोगों को दूर करे यह दाख का शर्बत है और कई बार का परीक्षा किया हुआ कभी निष्फल नहीं जाता है यह अद्भुत योग है।

एलादी बटी।

छोटी इलायची के बीज, तेजपात, दालचीनी काली मिर्च, पीपरि ये सब दो-दो तोला ले और मिश्री, मौरेटी, खजूर दाख, मुनक्का, ये चार-चार तोले लेकर सबको बारीक चूर्ण कर शहद डालकर एक-एक तोले की गोली बनावे फिर शरीर का बल देखकर आधी अथवा एक-एक गोली रोज खावे तो खाँसी, श्वाँस, ज्वर, हिचकी, वमन, मूर्छा, मद, भ्रम, रुधिर थूकना, तृषा, पसली दर्द, अरुचि राज रोग, प्लीहा, आमवात, स्वरभेद, क्षय इतने रोगों को दूर करे। यह तृप्ति कर्त्ता और वीर्यवर्द्धक और रक्तपीत्त नाशक है—यह परीक्षा किया हुआ है अनुभव करें।

मरिचादि बटी।

मिर्च एक तोला, पीपरि छोटी १ तोला, जवाखार छः माशे अनार का बकला २ तोला इनको बारीक पीसकर आठ तोले गुड़ मिलाकर तीन तीन माशे की गोलियां बना लेवे फिर एक गोली मुख में रखकर धीरे २ रस चूसे तो सब प्रकार की खाँसी दूर हो यह भी परीक्षा किया हुआ है

लवंगादि बटी।

लौंग, कालीमिर्च, बहेड़े की बकली ये सब एक एक तोला और खैरसार ३ तोला सबको महीन पीसकर बबुरकी

छाली के काढ़ा में चना बराबर गोली बना छाया में सुखा लेवे फिर एक गोली को मुख में रख कर धीरे-धीरे रस चूसे तो आठ घड़ी में सब प्रकार की खाँसी दूर हो खाँसी वाला परहेज से रहे।

बच्चों के खाँसी की दवा।

बड़ा मुनक्का एक उसके बीज निकालकर उसमें ककड़ा सिंगी १ रत्ती और दालचीनी १ रत्ती मिलाकर खिलावे इससे लड़कों की सब प्रकार की खाँसी दूर हो कफ व खर-खर करना दूर हो इससे उत्तम और दूसरी दवा लड़कोंकी खाँसी दूर करने की नहीं है, यह कई बार की परीक्षा की हुई है।

दमा रोग की दवा।

थूहर की मोटी लकड़ी एक हाथ लम्बी लेकर एक तरफ से पोली कर उसमें फिटकरी एक छटाँक रखकर फिर कपड़ा मिट्टी चढ़ाकर कण्डेकी आगमें जला दे फिर ठण्डा होने पर निकाल कर उसमें से फिटकरी निकाल पीसकर शीशीमें रख देवे फिर हर रोज दो रत्ती पानमें रखकर खावे तो १५ दिन में दमा दूर हो।

(२)

चिरचिरे का खार २ रत्ती या थूहर का खार २ रत्ती या आक का खार २ रत्ती या तमाकू का खार २ रत्ती पान

में रखकर खावे या एक माशे शहद के साथ खावे तो दमा दूर हो गले व छाती में जो कफ भरा है सो अलग हो ।

मृगी रोग की दवा ।

ब्राह्मी बूटी का स्वरस १ तोला, शहद १ तोला मिला कर पीवे तो ३ दिन में मृगी व उन्माद दूर हो ।

(२)

कछुये का लोहू एक तोला, जौ का आटा १ तोला, शहद १ तोला सबको मिला कर उड़द के बराबर गोलियाँ बना छाया में सुखा रक्खे फिर सबेरे शाम एक-एक गोली रोज खावे तो १५ दिन में मृगी रोग दूर होय ।

गुर्चादि अमृत योग ।

गुर्च का सत्, उसवा का सत्, भाँग का चूर्ण, बड़ी इलायची, सौंफ, सनाय की पत्ती ये सब सात-सात तोला और मिश्री १४ तोला, सफेद चन्दन, सोंठी, दो-दो तोला लेकर कपड़ छान चूर्ण करके एक सेर शहद में मिलाकर आधा तोला से एक तोला तक खाय तो मलके बिकार पेट की पीड़ा, कलेजेकी गर्मी, सर्वज्वर, पेशाव की जलन, उदर के रोग, आमवात, शोथ रक्तविकार ये सब रोग जड़ से दूर होवे, क्षुधा की वृद्धि, शरीर उत्तम कान्ति से युक्त और बलवान हो ।

बालकों के पलई (हवाडबा) की दवा।

आदी, पीपरि दोनों को एक सुतुही पानी में पीस छान गरम करके बालक को पिलावे और शीत से बचावे तो पलई शान्त हो।

(२)

पक्के नागर पान ३ माशे, पीपरि २ माशे पानी एक घूँट भरी में पीस छान गरम करके पिलावे तो बालक का पलई दूर हो और ज्वर भी दूर हो।

लेप।

धतूरे के पत्ते का रस, सोंठि का चूर्ण अफीम एक में मिलाय के अग्नि पर गरम करके जहाँ पर पलई मारती होय वहाँ पर लेप करे और बालू की पोटरी बना गरम करके बालक को खूब सेंके जिससे शीत शरीर में से दूर होय इस लेप और सेंक से साँस का खींचना बन्द हो जाता है।

बालक के माटी खाने की दवा।

जो बालक माटी खाता हो उस बालक को रेंड़ी का तेल बार-बार पिलावे, रोज की जो माटी बालक ने खायी है वह सब दस्त से गिर पड़ेगी फिर नीम का तेल हींग पिलाने से बालक के पेट से सब कृमि गिर पड़ेंगे।

त्रिफलादि चूर्ण ।

त्रिफला और पीपल दोनों को कूट पीस चूर्ण बनावे तब शहद के साथ चाटे तो कास, श्वांस, ज्वर को नष्ट करे और अग्नि को प्रबल करे ।

कायफलादि चूर्ण ।

कायफल, मोथा, कुटकी, कचूर, काकड़ा सगी, पुष्कर-मूल, इन्द्रायन इनको इकट्ठे कर कूट पीस कपड़ छान चूर्ण बनावे फिर शहद और अदरख के रसके साथ चाटे तो ज्वर हरे, कण्ठ शुद्ध हो, कास, श्वास, अरुचि, ताप, शूल छर्दि क्षय इन सबको दूर करे ।

सर्वातिसार पर चूर्ण ।

मोथा, इन्द्रयव, बेल, लोंध मोचरस, धौफूल इन सब औषधियों को कूट पीस छान चूर्ण कर मट्ठामें गुड़ डाल कर ले तो सब अतिसार प्रवाहिका को बन्द करे यह चूर्ण परम ग्राही है ।

संग्रहणी आदिपर चूर्ण ।

अनार आठ तोला, शक्कर ३२ तोला, तज पत्रज, इलायची ये तीनों मिला कर चार भरी, त्रिकुटा १२ भरी इन सबको ले एकत्र कर कूट पीस छान चूर्ण करे । इसके

खाने से रोचन, दीपन, कण्ठ शुद्ध और ज्वर नाश होता है, यह चूर्ण ग्राही है संग्रहणी रोग को मिटाता है।

काबुली चूर्ण।

काबुली हड २ तोले, सनाय की पत्ती २ तोले, काला नोन २ तोले लेकर कूट कपड़ छानकर चूर्ण तैयार करे फिर १ तोला चूर्ण शाम को गरम पानी के साथ खावे तो पेट को साफ करे, भूख को बढ़ावे, अजीर्ण को दूर करे, बुद्धि को बढ़ा ताकत को लाता है।

धनियाँ का शर्बत।

धनियाँ १ टंक, मिरच १ माशा, पाव भर पानी में पीस के सबेरे पीवे शरीर की गरमी और अतिसार को दूर करे और भूख लगे, मन प्रसन्न हो।

सौंफ का शर्बत।

सौंफ एक टंक, मिरच एक माशा पाव भर पानी में पीस के सेंमर का गोंद डालके पीवे तो कब्जियत व पेट का दर्द और शूल व हिचकी दूर हो और भूख लगे।

पुदीना का शर्बत।

पुदीना २ तोला, मिरच एक माशा पीपल एक माशा पाव भर पानी में पीस के पीवे तो शीतांगसन्निपात दूर हो

और अजवायन को सोंठमें मिलाकर देह पर धूरा करे, ऊपर से धुआँ करे तो शरीर की पीड़ा नाश हो।

जीरे का शर्बत।

जीरा एक तोला, मिरच एक माशा मिश्री पांच माशा एक पाव पानी में पीसके पीवे तो कलेजे की गरमी, देहकी जलन, हाथ-पाँव की जलन दूर हो, उलटी बन्द हो और मन प्रसन्न हो।

सोंठ का शर्बत।

सोंठ पाँच टंक, तीन पाव पानी में शाम को भिगो देवे, सबेरे मलकर छान लेवे, मिश्री डालकर पीवे तो कफ ज्वर को नाश करे और कफ का संग्रहणी रोग दूर हो।

आँवले का शर्बत।

आँवला दस टंक, तीन पाव पानी में भिगो देवे सबेरे उसको छान लेवे फिर बायबिडंग २ माशे, दाल-चीनी एक माशे इनको भी पीस छान कर उसी में मिला देवे तब पीवे तो जलनबाय को दूर करे तृषा और हाथ पाँव की जलन तथा हड़फूटन को नाश करे।

ककरी के बीज का शर्बत।

ककरी के बीज एक तोला, तरबूजके बीज एक तोला, पीपल एक तोला इन सबको आध सेर पानी में पीस छान

कर पीवे तो जिसको मूर्छा आवे उसकी मूर्छा दूर हो शरीर की हड़फूटन शिर के दर्द को नाशे तथा बल वीर्य को बढ़ावे यह सर्वोत्तम शर्बत है।

नीम का शर्बत।

नीम की छाल दस टंक खुरासानी बच एक माशा, मिरच २ माशा इनको आधपाव पानीमें पीसकर पीवे तो बिगड़े खूनको दूर करे दाद, ददोरा, फोड़ा फुन्सी इत्यादिको दूर करे स्त्री पीवे तो बालकों को रोग नहीं हो और इस दवे पर खट्टे मीठे का परहेज रखे और नमक न खावे।

बकाइन का शर्बत।

बकाइन की छाल ५ टंक, मूली के बीज २ माशे, आध पाव पानी में पीसकर छान लेवे, फिर उसमें मिश्री डालकर पीवे तो खूनी बवासीर संग्रहणी, हाथ-पाँव की जलन, शिर दर्द, गुल्म रोग और फ्लीहा रोग को नाशे, लेकिन खट्टे मीठे का परहेज रखे।

हुरहुर का शर्बत।

हुरहुर का पत्ता ५ टंक मिर्च एक माशे आध पाव पानी में पीसकर पीवे तो बवासीर रोग जड़ से जाय और तिल्ली, बरवट, बायगोला का नाश करे।

कुकुरौंधा का शर्बत ।

कुकुरौंधा को दश टंक ले आध पाव पानी में पीस गाय का घी डालकर पीवे तो शरीर को पुष्ट करे कमर के दर्द को दूर करे और आँखों की ज्योति को बढ़ावे, सुस्ती को मिटावे, भूख को लगावे ।

बबूर का शर्बत ।

बबूर के पत्ते ५ टंक, मिर्च ३ माशे, आध पाव पानी में पीस कर पीवे तो सुजाक को नाशे और पेशाब बन्द हो तो खुले पथरी चिनिगजाय जाय ।

फालसा का शर्बत ।

फालसा ५ टंक, मिर्च एक माशे, मिश्री एक तोला पावभर पानीमें पीस पीवे तो स्त्री का प्रसूत रोग दूर हो और स्त्री के कलेजे की गरमी को दूर करे और भूख लगे ।

मुञ्जीस ।

उन्नाव, लसोड़ा, मकोय, गुलाब का फूल, बनपसा, सौंफ, खतमी, खजाबी, नीलाफर, हँसपदी, मुनक्का अंजीरी हरैछोटी, कासनी के बीज, मुलहठी, खीरा के बीज, मिश्री सनायकी पत्ती ये सब दवा दो-दो माशे लेवे थोड़ा कुचल देवे तब डेढ़ सेर पानी में शाम को भिगो देवे, सबेरे अग्नि पर रखके चुरावे जब आध सेर पानी रह जावे तब उतार

छानकर सबेरे पीवे तो यह मुञ्जीस मल को पकाता है, जुलाब को उतारता है, तीनों दोषों को निकालता है, शरीर को सुधारता है, जिसका पेट कठिन हो उस रोगी को मुञ्जीस सात दिन, नौ दिन ग्यारह दिन तक पिलावे तो दोष निकालता है, मुञ्जिस से सर्व राग जाता है।

गठिया जाने का तेल।

दालचीनी २ तोला, कुचिला ३ तोला, अच्छी खाने की सुरती ३ तोला, लहसुन ४ तोला, भिलावा १ तोला मीठा थेल २८ तोला ले एक में मिलाकर मन्द मन्द अग्नि से पकावे जब दवा सब जल जाय तब तेल उतार छानकर शीशी में रख देव फिर जहाँ दर्द हो वहाँ मालिश करे तो सर्व प्रकार का दर्द दूर हो।

सर्व रोग नाशक योग।

त्रिफला ८ तोले, दालचीनी ८ तोले, कमलगट्टा का गोंद ८ तोले सबको कूट कपड़ छान करके सब दवा से आधी मिश्री मिलाय के घी शहद संग शाम सबेरे खाय तो यह दवा सब रोग हरै। और पुष्टि करने में तो यह रस गोली चूर्ण पाक इत्यादि सबसे अव्वल है यह योग हजारों में अजमाया हुआ है।

साँप की दवा।

सफेद मिर्च, सफेद मदार की भस्म, नीलाथोथा ये तीनों को बराबर ले खरल करके एक-एक माशे की गोली बाँधे फिर पानी के साथ एक-एक गोली खाने को देवे तो जहर दूर होय।

बिच्छू की दवा।

नौसादर, सोहागा, कली का चूना तीनों को एक में मिला के सूँघे तो बिच्छू का डंक दूर होय।

नोट—मैंने घरेलू वैद्यक पुस्तक में साँप और बिच्छू की दवा उत्तमोत्तम लिखा है जो कि साँप और बिच्छू का काटा रोगी मृत्यु के मुख से बच जाता है। दवा एक से एक अमूल्य रत्न हैं। हमारे "घरेलू वैद्य" नामक पुस्तक को मँगाकर पाठकगण अनुभव करें जिससे संसार का उपकार होगा और अपने को यश मिलेगा। घरेलू वैद्य का मूल्य ।=) है

जन्तुओं की आयु कितनी होती है।

हिन्द का हाथी सत्तर वर्ष, अफ्रीका का हाथी पचास वर्ष, घोड़ा बासठ वर्ष, शाह मृग चालीस वर्ष बत्तक बावन वर्ष, पालतू कुत्ता छत्तीस वर्ष, चील अड़तीस वर्ष सिंह पचीस वर्ष, राज हंस पचीस वर्ष, पालतू बिल्ली एकइस से तीस वर्ष, बकरी और गाय सतरह वर्ष, चूहा डेढ़ वर्ष, हिप्पोंपोटेमस एकतालीस वर्ष, गोरिल्ला बन्दर छब्बीस वर्ष, सोनेरी गरुड़

छियालीस वर्ष, जंगली कौवा और अबाबील आठ से नौ वर्ष, कबूतर पैंतीस वर्ष, बगुला बीस वर्ष, शेर सतरह वर्ष रोहू मछली बारह वर्ष, और मेढक सोलह वर्ष ।

अब हम घोड़ों की दवा लिखते हैं ।

इस रोग में घोड़े को बहुत कष्ट होता है, जब यह रोगबढ़ जाता है तो घोड़े की मृत्यु का कारण भी हो जाता है । जब घोड़ा परिश्रमकरके आताहो और पसीने निकलरहे हों अथवा कुसमय पानी पिलाने से अथवा सर्दी लगजाने से यह रोग उत्पन्न हो जाया करता है। इसमें घोड़े खाँसने लगते हैं, परन्तु इससे पहिले उसकी नाक टपकने लगती है । खाँसी उत्पन्न होते ही दवा करना उचित है क्योंकि जुखाम के बिगड़ने से बड़े बड़े उपद्रव खड़े हो जाते हैं।

रोग की दशा में घोड़े को पानी पिलाने के पीछे एक प्याज खिला देनी चाहिए, पीछे बांस की थोड़ीसी हरी पत्तियाँ खाने को देवे ।

(२)

हींग छः रत्ती, सोंठ चार माशे इन दोनों को पीस जौके आटे में मिला दाना के पीछे चार पाँच दिन तक देता रहे ।

(३)

जो जुकामके कारण आँखें पीली पड़गई हों तो दस बारह दिन तक पाव भर मेथी दाना और पैसे भर काली मिर्च को पीस कर दोनों को मिला कर देता रहे ।

(४)

भटकैया की जड़, फल फूल पत्ते समेत आग में जलावे उसमें से दो छटांक लेकर जौ के आँटे में मिला गोली बना दोनों समय चार पाँच दिन तक देवे।

(५)

सेर भर अजवायन को आदमी के मूत्र में तीन दिन तक भिगोवे फिर सायंकाल के समय दाना देने के पीछे इसमें से जौ के आटे में एक पैसे भर मिला गोली सा बना चार पाँच दिन तक खिलाना चाहिये।

(६)

रोगी घोड़े को दाना देने के पीछे दो दिन तक भुनी हुई अदरख जौ के आटे में मिलाकर देवे फिर दो दिन तक दाना देने के पीछे एक छुआरा देवे। ऐसा करने से जुकाम में जो नाक टपकता हो वह आराम हो।

कुकुरी रोग।

इसमें घोड़े का मूत्र और लोद दोनों बन्द हो जाता है। बार बार पृथ्वी पर लोटता है, बगलों की ओर झाँकता है, पेट में दर्द होता है।

दवा।

सोंठ और काजल समान भाग लेकर गोमूत्र में रगड़कर बत्ती बना ले और इसको घोड़े व घोड़ी के मूत्र मूत्र स्थान में रख देवे।

(२)

सेंधा नमक, पीपल, नोम की छाल, नागर मोथा, सरसो (तेलहन) इन सबको तेल में पीस कर नली द्वारा गुदा में भर देवे।

(३)

मुर्गी के दो अण्डे जौ के आटे में मिलाकर खिलावे, इसी, तरह दो दो घण्टे पीछे दो दो अण्डे देवे।

(४)

कंजे का गुदा पैसा भर भुना हुआ और काला नमक पसे भर, सफेद जीरा पैसे भर इन सबको पीस कर देवे। अथवा सूखा तम्बाखू और कंजे का गुदा पैसा २ भर दोनों चने के चूर्ण में मिला कर देवे।

(५)

सोंठ दो माशे गुड़ चार माशे, हींग चार माशे इन तीनों को कूटकर गोली बना कर खिलावे।

(६)

हाथी की लीद और पीपल की छाल दोनों छः सेर पानी में चढ़ा दे जब तीन सेर रह जाय तब छानकर पिला दे।

(७)

काला जीरा, काली मिरच भुना हुआ सुहागा, सज्जी, कुटई, राई, हींग और अजवायन इन सब को बराबर बराबर लेकर कूट डाले और अदरख के रस में छटांक छटांक की गोली बनावे। इन में से एक एक गोली जब तक दस्त न होजावे तब तक देता रहे।

दस्त बन्द होने पर यह दवा दे।

गुड़ तीन छटांक, हींग दस रत्ती, सौंफ एक छटांक

अजवायन आधी छटांक, सुहागा आधी छटांक, नमक एक छटांक इन सब को मिलाकर तीन गोलियाँ बना लेवे और जब तक दस्त न हो तब तक घंटे घंटे भर में एक एक गोली देता रहे ।

आग से जलने पर यह दवा करे ।

जले हुए स्थान पर प्याज का रस लगाना चाहिये । अथवा आधी छटांक पत्थर का चूना ढ़ाई पाव पानी में मिल कर अच्छी तरह से हिलावे तब रख दे फिर थोड़ी देर में चूना नीचे बैठ जायगा जब चूना बैठ जाय तब ऊपर के पानी को धीरे धीरे निकाल कर एक बोतल में भर ले फिर एक बोतल में थोड़ा सा अलसी (तीसो) का तेल और उसके तिगुना चूने वाला पानी मिलाकर हिलावे । हिलाते हिलाते जब गाढ़ा हो जाय तब जले हुए स्थान पर लगा देवे यह दवा घाव को सदा तर रक्खे गी ।

आँखों की दवा ।

जो चोट लगने से आँख में ललाई आ गई हो तो दो तीन दीन तक नमक और फिटकरी के पानी से धोवे ।

(२)

समुद्र फेन, पके हुए चावलों का माँड़ और शहद तीनों मिलाकर आँख में अञ्जन की तरह लगावे ।

आँख की फूली की दवा।

फिटकरी का लावा और उसके बराबर ही सिंदूर मिलाकर पीस ले। इस में पाँच व छः रत्ती प्रति दिन दो बार आँख में फूलो के ऊपर लगाता रहे।

नखूना और जाले कि दवा।

यह रोग आँख के कोने में तीन फाँक का पतला नोकदार निकलता है इसका मांस बड़ा कड़ा होता है।

मुर्गी के अण्डे के छिलके की राख, उसी के समान गंधक और नीला थोथा, इन तीनों को महीन पीस कर आदमी के मूत्र में गोली बाँधे और आदमी के मूत्रमें ही घिस कर लगावे।

(३)

धोंधा का चूर पीली फिटकरी, और काँच की चूड़ी इन तीनों को समान भाग लेकर महीन पीसकर बुकनी बना ले और नली में भर कर आँख में फूँके। इस से नाखूना, माड़ा, जाला सब दूर होवे।

नाक से रुधिर बन्द करने की दवा।

जिस घोड़े की नाक से रुधिर बहता हो उसकी नाक में हिरन अथवा भैंस के सींग की राख नली में भर कर फूँक देवे।

(२)

आदमी का मूत्र छः ड्राम और इतना ही तिल का तेल दोनों को मिलाकर नली में भर कर नाक में फूँके।

मुख में काटों की दवा।

इस रोग में मुख के भीतर नीचे काँटे पड़ जाते हैं। कलमी सोरा, सेंधा नमक, समुद्रफेन, रसौत इन चारों को समान भाग ले धाय के फूल के रस में मिला कर घोड़े के मुख में तीन दिन तक मले।

रुधिर बमन की दवा।

जो घोड़ा रुधिर का बमन करता हो, उसके लिये जामुन की छाल छायामें सुखा तीन अंडे की सफेदी मिला एक गोली प्रति दिन प्रातः काल सात दिन तक खाने को देवे।

पीठ की सूजन की दवा।

गेहूँ का मैदा, हल्दी, सज्जी इन सब को महीन पीस कर अग्नि पर पकाकर लेप करे।

घाव का मरहम।

सरसो का तैल आध सेर, लहसुन आधपाव, सुरती एक छटांक, लाल मिरच (मर्चा) एक छटांक, नीम की पत्ती आधपाव मुर्दाशंख एक तोला, सिंदूर दो तोला

संगजराहत दो तोला इन सबको तेल में पका लेवे और ठण्डा होने पर घाव के ऊपर लगाता रहे।

मूत्र बन्द होने पर पेशाब कराने की दवा।

एक छटांक शोरा पानी में घोलकर पिला दे, अथवा शोरे को पानी में भिगो कर मूत्र मार्ग में रख दे।

कुरकुरी की दवा।

इसमें आँतों में पीड़ा होती है, पेशाब और लीद कठिनता से होते हैं, कभी कभी होती ही नहीं है। पेट में गडगडाहट होती है बेसुध होकर बार बार लेटता है डेहरा लाल पड़ जाता है, इस में दाग देना अधिक लाभ दायक है, जो न दागे तो नीचे लीखी हुई दवाइयाँ करे।

घोड़ावच, गेरू, हींग, वायबिडंग इन को समान भाग चार चार दिरम लेकर कूट पीस कपड़छान कर ले फिर सेर भर शराब में मिला नाल में भर भर कर पिलावे, जब तक अच्छा न हो तब तक प्रति दिन करता रहे।

गज चर्म की दवा।

इस रोग में घोड़े का चमड़ा हाथी के चमड़े के समान खुर खुरा हो जाता है, शरीर की चमक दमक मारी जाती है।

कासनी, कांजी, बच और भिलावा, इन में से सब दवाओं को कांजी, में मिला पाताल यंत्र में रख तेल खींच ले और उस में तिल का तेल मिलाकर लगाता रहे ।

पित्ती की दवा ।

सर्प की काँचली थोड़े गुड़ में मिला कर खवावे अथवा काली मिर्च और गेरू छटांक छटांक भर पीसकर तीन दिन तक खिलावे ।

सन्निपात ज्वर की दवा ।

यह ज्वर घोड़े को अचानक उत्पन्न हो जाता है और यदि इसका उपाय न किया जाय तो घोड़ा मर जाता है । इस ज्वर में घोड़े की नाड़ी तेज चलती है नाक के भीतर सुर्खी सी दिखलाई देती है, सामने की टांगें तनी हुई सी रहती हैं, श्वांस अधिक वेग से चलने लगती है और शरीर गरम हो जाता है ।

सुर्मा धेला भर और डिजिटेलिस, शोरा और काला-नमक प्रत्येक एक पैसा भर इन सब को थोड़े शहद में मिला कर एक गोली बना ले और ऐसी एक एक गोली प्रत्येक आठ घंटे के पश्चात् घोड़ों को खिलावे तो आराम हो

कफज्वर की दवा।

इस ज्वर में शरीर गरम हो जाता है, मुँह से कफ निकलता है और घोड़ा काँपने लगता है।

डिचिटेलिस आधा ड्राम, कपूर एक ड्राम, सुर्मा एक ड्राम, अलसी (तीसी) की खली एक ड्राम और शोरा तीन ड्राम इन सबको मिलाकर एक गोली बनावे और ऐसी २ दो गोली दिन में दो बार घोड़ा को खिलावे।

[२]

गन्धक दो पैसा भर, हींग आधी छटांक, मुलहठी का चूर्ण आधी छटांक, और तारपीन का तेल आधी छटांक इन सबको मिला कर चार गोली बनावे और प्रति दीन रात को एक गोली खिलावे।

कमल रोग।

इस रोग में घोड़े के नेत्र पीले पड़ जाते हैं और मूत्र का रंग पीला तथा गाढ़ा हो जाता है। दाना खाने से घोड़े को अरुचि हो जाती है, दस्त साफ न हो तब नीचे लिखे दवा को करे।

कैलोम्यल एक ड्राम सुर्मा टुकड़ा भर और मुसब्बा। धेला भर, सबको शीरा में मिलाकर एक गोली बनावे।

चार-चार पांच-पांच घण्टे पर ऐसी २ एक-एक गोली जबतक दस्त न हो तब तक दे।

प्रमेह रोग की दवा।

इस रोग में धातु गिरती है इसलिये नीचे लिखी हुए दवा दे।

कतिला देवे अथवा कत्था, केले की जड़ और कतिला प्रातः काल देवे। अथवा सफेद जीरा अथवा मूली की जड़ का चूर्ण बना कर देवे।

भौंरी दूर करने की दवा।

यदि घोड़े की भौंरी दूर करनी हो तो उस जगह की खाल काटकर वहां सिन्दूर और तेल मिला कर लगावे जब तक घाव न भरे तब तक बराबर इसी उपाय को करता रहे।

[२]

जो घोड़ा आग या बारूद से जले तो उसके घाव को प्याज के पानी से धोया करे। बरसाती भी इससे दूर होती है, यह मनुष्यों के लिये भी लाभदायक है।

[३]

जो घोड़े के घाव से रुधिर बहना बन्द न हो तो मकड़ी की जाली लेकर उस जगह पर लगावे अथवा सुहागे के चूर्ण को घाव पर छिड़के।

[४]

यदि घोड़े के घाव को नीम के पानी अथवा आदमी के मूत्र से धोवे तो बहुत लाभदायक है।

[५]

जिस घाव में कीड़े पड़ गये हों उसमें सूखा तम्बाकू भरना उत्तम है अथवा कुटकी पीस कर भरे।

[६]

जो घाव पर बाल न जमते हों तो थूक में कड़वा तेल फेट कर लगावे।

[७]

साबुन और नील मिलाकर मले। अथवा चमड़ा जलाकर उसमें तेल, सिंदूर और थोड़ा साबुन मिला कर लगावे।

साँप काटे की दवा।

घोड़े को साँप काट खाय तो उसको जितना वह खा सके उतनी नीम की पत्ती खिलावे।

अब हाथियों के रोग की दवा लिखते है

हाथी के पेट में मरोड़ों का लक्षण

मरोड़ा दो प्रकार का होता है, एक तो आम से

होता है और दूसरा वायु की गांठ से होता है। जब हाथी बारम्बार भूमि पर गिरे और बारम्बार उठे तो जानो कि उसके पेट में मरोड़ा है।

इस रोग में तेलिया सोहागा और नई सनाय दोनों तीन तीन पैसा पेहटुआ पाव भर, सौंफ आध सेर, सोंठ आध सेर, गाय का घी तीन टका भर पहिले घी को अग्नि पर चढ़ाकर उसमें सब औषधि डालकर भून ले और फिर उसमें लावा मिलावें तदनन्तर पाव पाव भर नित्य हाथी को खिलावे तो चार दिन में बिलकुल आराम हो जाय और सब आम बाहर निकल जाय।

बिरेचन की विधि।

सांभर नमक, काली मिरच और लहसन प्रत्येक पाव पाव भर देशी राई सेर भर इन सब को कूट कर आध सेर थूहर के दूध में मिला कर तीन खुराक बनै और तीन दिन तक प्रातः काल एक एक खुराक हाथी को खिलावे तो बहुत उत्तम बिरेचन होय यह सब उदर विकारों को नाश करता है।

बिरेचन के बाद यह कर्म करे।

जब हाथी को दस्त हो चुके तब उस को मूँग

की दाल की खिचड़ी बनाकर खिलावे और नीचे लिखे चटनी देवे।

चटनी।

फूला हुआ सुहागा माजूफल, बड़ी इलायची के बीज, जवाखार, लौंग और समुद्रफल प्रत्येक एक एक पैसा भर धनियाँ, सौंफ, प्याज, अदरख लहसुन और काली मिरिच और भुने हुए चना पाव भर सबको कूट कर कपड़े में छान ले और पचीस कागजी निवुए के रस में सान कर रख ले तथा थोड़ा २ हाथी को खिलावे तो बहुत फायदा करता है। इससे भूख बढ़ती है और हाथी के शरीर में बल आजाता है।

मन्दाग्नि के लक्षण।

जब जठराग्नि मन्द हो जाती है तब रोगी जो कुछ भोजन करता है वह नहीं पचता। उसके चेहरे पर सुस्ती छा जाती है, भोजन की रुचि जाती रहती है। कभी २ पेट फूल जाता है, ऐसा होने पर रोगी के शरीर में कोई रस नहीं बनता है, जिससे दुर्बलता बढ़ जाती है।

मन्दाग्नि नाशक दवा।

कोंच, गुर्च, बनउर्दी, बनमूँगा, गगनधूरि, का कोली सेमर, नीम, कंजा विलाई कन्द और असगन्ध इन को

समान भाग लेकर कूट छान ले और इनका कवल बनाकर हाथी को खिलावे तो अग्नि बहुत बढ़ जाती है, और सर्वधातु क्षीणता आदि रोग दूर हो जाता है।

[२]

सेंहुँड़ की जड़, सहजने की जड़, अदरख और शोरा इनको कूट कर गोबर में सानकर हाथी को खिलावे तो कोठा शुद्ध होता है और मिट्टी खाने से अरुचि होती है एवं कृमि रोग नाश होता है।

हाथी के पेट फूल जाने की दवा।

गोखरू, मुलीम, और सुहागा प्रत्येक पाव पाव भर नौसादर आध पाव और गुड़ एक सेर. सब औषधियों को पीस कर गुड़ में सान कर दो दो पैसा भर की गोली बनाले और रात्रि के समय एक गोली नित्य हाथी को खिलावे तो पेट का फूलना दूर हो।

नेत्र रोग की दवा।

जो मकड़ी के जाले के समान सफेद पतली वस्तु पुतली पर दिखलाई दे उसको माड़ा कहते हैं। जो सफेद मोटी होकर नेत्र में अलग लटकती है उसको ढेठर या फूली कहते हैं। जो माड़ा से भी पतली होती सफेदी तमाम नेत्र में छा जाती है, उसको जाला कहते हैं। नेत्रों की पुतली के चारो तरफ जो सुर्खी छा जाती है, जिसके किनारे कुछ मोटे और डोरा सा उभरा होता है उसे नाखूना कहते हैं। जिसमें हाथी के नेत्रों का पलक पक

जाता है उस को बह्मनी रोग कहते हैं । और नेत्रों से पानी जिसमें बहुत ढलता है वसे ढलका रोग कहते हैं ।

माड़े की दवा ।

सफेद तिलो के तेलमें नौसादर को घिसकर नेत्रों में अञ्जन करे तो माड़ा दूर हो ।

[२]

सफेद चिरमिटी, सिरसके बीजों की मिगी माजूफल, निर्मली, रत्नजोति, लावा, फिटकरी, छोटी हरड़, बड़ी हरड आंवा हल्दी, गूगल जायफल, अफीम और हाथी का नख इन सब दवाओं को समान भाग लेकर पीस कर सुरमा के समान बारीक करले और सहद में मिलाकर नेत्रों में आँजे तो माँड़ा औ फूली इनका तुरन्त नाश हो ।

नखूने की दवा ।

लौंग, निर्विसी, अदरख, अफीम और आँवा हल्दी, इनको समान भाग लेकर खूब महीन पीस ले और कागदी नीबू के रस में खरल करके हाथी की आँखों में लगावे तो नखूने रोग का नाश होय ।

जाले की दवा ।

बबूल की पत्ती, नीम कीप त्ती, नीम की छाल, अजवायन सेंधा नमक, लावा, फिटकरी और चूल्हे कि लाल मिट्टी इन सब को समान भाग लेकर पानी में पीस कर नेत्रों लगाने से जाला नाश होता है ।

ढलके की दवा ।

रसौत, लौंग, फिटकरी, लावा और अफीम इन सब को

समान भागले फिर थोड़ी सी इमली लाकर उसको पानी मे भिगो दे और भीगने पर उस पानी को निकाल कर उसमें इन औषधियों को घिगड़ करके हाथी के नेत्रों में आँजे तो ढलका रोग का नाश होयँ ।

हाथी के टूटे दाँत की दवा ।

विषखपरा का पंचांग लेकर उसको पीसकर हाथी के दातों पर लगावे तो टूटे दाँत ठीक होय ।

हाथी के दाँतों से कीड़ा दूर करने की दवा ।

नीला थोथा, छोटी हरड़, सीपी का चूर्ण, माजूफल, बबूल की छाल और सफेद कनेर की जड़ छाल इन सबको समान लेकर पीस ले, फिर कीड़ा लगे हुये दाँत में लगावे तो कीड़े दूर हों ।

बिगड़े हुये दाँतों को गिराने की दवा ।

नौसादर, तीखुर और कच्चा सुहागा, तीनों को समान भाग लेकर सेंहुड़ के दूध के साथ खरल में घोटे, फिर उसे दाँत की जड़ में लगावे दाँत गिर पड़ेगा ।

रस रोग ।

जब हाथी पाँव धरती पर पटकने लगे तो तत्काल उसकी दवा करे नहीं तो विष हाथी की छाती में बढ़कर कण्ठ में फूट जाता है और रस रोग उत्पन्न हो होता है । जिससे हाथी खा नहीं सकता । रस रोग चार प्रकार का होता । (१) स्वेद रस (२) विस्ती रस (३) ज्वर रस (४) घन रस ।

सब प्रकार के रस रोग की दवा ।

समुद्रफेन आधसेर, बारूद पावभर, कजाकी गूदी आधसेर

गोखरू आध सेर, कुचला तीन पल, हल्दी सोलह पल, सीपी का चूना छः पैसा भर, करहुआ तीन पल, और भाड़ की मिट्टी तीन पल ले। पहिले कुचिला को अधकूट करले फिर सब औषधियों को कूटकर कपड़े में छान कर चौंसठ पल गुड़ मिलावे और तीन माशे की गोली बनाकर नित्य हाथी को खिलावे तो सब प्रकार के रस रोग का नाश हो।

लोहा भस्म २नं०	६) भरी	रस सिन्दूर भस्म	६) भरी
लोहा भस्म ३नं०	५) भरी	स्वर्ण वंग	४०) भरी
अभ्रक भस्म १नं०	६) भरी	शोधित गंधक	।।।) भरी
अभ्रक भस्म २नं०	६) भरी	शंख भस्म	३) भरी
अभ्रक भस्म ३नं०	५) भरी	शोधित हरिताल	३) भरी
मकरध्वज १नं०	४०) भरी	कस्तूरी १ नं०	८०) भरी
मकरध्वज २नं०	३०) भरी	कस्तूरी २ नं०	६०) भरी
मकरध्वज ३नं०	२०) भरी		

हमारे यहाँ हर प्रकार के शोधित विष भस्म और धातु भस्म तथा रसायन औषधियाँ मिलती हैं। सर्वसाधारण के लिये सुभीता किया गया है।

* समाप्त *

मिलने का पता—बाबू महादेवप्रसाद सिंह,
मु०—महादेव नगर, पो०—हरदिया (विहिया) जि०—शाहाबाद

पुस्तक मिलने का पता—
बाबू ठाकुरप्रसाद गुप्त बुकसेलर,
घर—राजादरवाजा, दूकान—कचौड़ीगली, बनारस सिटी।

बम्बई प्रेस, राजादरवाजा, बनारस सिटी।